ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों एवं कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा–शिक्षण व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Classroom-Teaching Behavior of Urban and Rural Science Students and Urban and Rural Art Students In Training Colleges

Paper Submission: 03/03/2021, Date ofAcceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

विजय प्रताप सिंह
सहायक आचार्य,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
बी वी एम कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और किसी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को विकसित करना है जैसे कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक ताकि वह अपने स्वयं के, अपने समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके। सभी शिक्षण व्यवस्था का केंद्र बिंदु शिक्षक होता है शिक्षक समाज के नागरिको की गुणवत्ता को बढ़ाते है और नागरिक राष्ट्र का निर्माण करते है। शिक्षक के कार्य एवं व्यवहार छात्रों के प्रेरणा स्रोत है।

प्रस्तुत शोध में "प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों एवं कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा –शिक्षण व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन" किया गया है, प्रस्तुत शोध कार्य शून्य परिकल्पनाओं को आधार मानकर सम्पन्न किया गया है, प्रस्तुत शोध में घटनोत्तर अनुसन्धान विधि का प्रयोग किया गया है, प्रस्तुत शोध का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श (Random Sampling) के द्वारा उरई जनपद के 2 प्रशिक्षण महाविद्यालयों (1) दयानन्द वैदिक महाविद्यालय (2)गाँधी महाविद्यालय के 50 छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया हैं जिसमे 25 विज्ञान तथा 25 कला वर्ग से सम्बंधित है, इसी प्रकार 25 शहरी तथा 25 ग्रामीण क्षेत्र से सम्बंधित है, प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवहार के निरिक्षण और विश्लेषण के लिए फ्लैंडर्स कि दस वर्गीय अन्तः क्रिया पद्धति का प्रयोग कर प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया है।

Education is a continuous process and plays an important role in a person's life. The aim of education is to develop all aspects of a person's personality suchAs physical, mental, social, spiritual, emotional and cultural so that he can contribute to the development of his own, his society and the nation.

The focal point of all education system is the teacher. The teacher enhances the quality of the citizens of the society and the citizens build the nation. The teacher's actions and behavior are the source of inspiration for the students.

In the research presented, "A Comparative Study of Classroom-Teaching Behavior of Urban and Rural Science Students and Urban and Rural art Students In Training Colleges" has been done. The research work presented has been done on the basis of null hypothesis, Random Sampling method has been used in research presented, the researcher has selected 50 students from 2 training colleges in Orai district as randomists, with 25 belonging to science and 25 art classes through random sampeling, Similarly, 25 are related to urban and 25 rural areas, the study presented has analyzed and interpreted the products using Flanders ten-class interaction method for inspection and analysis of teaching behavior.

मुख्य शब्द : प्रशिक्षण महाविद्यालय, विज्ञान, कला, कक्षा–शिक्षण व्यवहार, शहरी एवं ग्रामीण।
Training Colleges, Science, Art, Classroom-Teaching Behavior, UrbanAnd Rural.

प्रस्तावना

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और किसी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को विकसित करना है जैसे कि शारीरिक; मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक ताकि वह अपने स्वयं के, अपने समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके। शिक्षा की अवधारणा है, गतिशील है, जैसे–जैसे समाज बदलता है, शिक्षा का कार्य भी बदलता है कई विचारकों, दार्शनिकों और शिक्षाविदों ने अनुभवों या दर्शन के आधार पर, शिक्षा को परिभाषित करने की कोशिश की है डॉ० राधाकृष्णन के शब्दों में,

The Teacher place in society in vital importance. HeActsAs the pivot for the transmission of intellectual traditionsAnd technical skills from generation to generationAnd help to keep lamp of civilization learning."

अध्यापको के महत्व को प्रकाशित करते हुए lexander the great की निम्न उक्ति बहुत महत्वपूर्ण है –

"I own my birth to my father but life to my Teacher"

कक्षा की सामाजिक परिस्तिथी में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया होती है। जो एक संज्ञात्मक क्रिया कलाप है। शिक्षण अधिगम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक अपनी कक्षा की सामाजिक सांवेगिक जलवायु पर कितना ध्यान देता है और इसके अनुरूप अपने क्रियाकलापों में कितना परिवर्तन कर लेता है।

दूसरी ओर किसी कक्षा का सामाजिक सांवेगिक वातावरण प्रमुख रूप से शिक्षण के कक्षा–कक्ष व्यवहार पर निर्भर रहता है। इस प्रकार शिक्षक तथा कक्षा का वातावरण एक–दूसरे पर निर्भर करता है।

सभी शिक्षण व्यवस्था का केंद्र बिंदु शिक्षक होता है शिक्षक समाज के नागरिको की गुणवत्ता को बढ़ाते है। और नागरिक राष्ट्र का निर्माण करते है। शिक्षक के कार्य एवं व्यवहार छात्रों के प्रेरणा स्रोत है। यद्यपि वह वर्तमान समय में अर्थात मनोवैज्ञानिक युग में शिक्षक का स्थान निर्देशक, पथ प्रदर्शक एवं अभिप्रेरक के रूप में माना जाता है। शिक्षक जब कक्षीय परिस्तिथियों में शिक्षण करता है तो सामान्यता शिक्षक कथनो के द्वारा अपनी पाठ्यवस्तु को पूरा करता है, शिक्षक व छात्रों के बीच चलने वाली अन्य प्रक्रिया शिक्षक व्यवहार की प्रमुख विशेषता है, इस अन्तः क्रिया विश्लेषणात्मक अध्ययन से इसके स्वरुप के विमीय आवश्यक पक्ष उजागर होते है। जिन्हे शिक्षण प्रक्रिया के अंदर समाविस्ट करने पर शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाया जाता है।

शोध कथन

"प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञानं वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों एवं कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा–शिक्षण व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के उद्देस्य निम्लिखित है–

1. विज्ञानं वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर तुलनात्मक अध्ययन करना
2. कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर तुलनात्मक अध्ययन करना

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य शून्य परिकल्पनाओं को आधार मानकर संपन्न किया गया है। जो निम्नलिखित है–

1. विज्ञानं वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की शोध विधि

प्रस्तुत शोध में घटनोत्तर अनुसन्धान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध का न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श (Random Sampling) के द्वारा उरई जनपद के 2 प्रशिक्षण महाविद्यालयों (1) दयानन्द वैदिक महाविद्यालय (2) गाँधी महाविद्यालय के 50 छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया हैं जिसमे 25 विज्ञान तथा 25 कला वर्ग से सम्बंधित है, इसी प्रकार 25 शहरी तथा 25 ग्रामीण क्षेत्र से सम्बंधित है।

सारणी संख्या – 1

क्षेत्र	विज्ञान वर्ग	कला वर्ग	योग
शहरी	13	12	25
ग्रामीण	12	13	25
योग	25	25	50

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवहार के निरिक्षण और विश्लेषण के लिए फ्लैंडर्स कि दस वर्गीय अन्तः क्रिया पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान (Mean)
2. सयुंक्त मानक विचलन (PSD)
3. विचलन की मानक त्रुटि (SED)
4. क्रांतिक अनुपात (t)

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पनाओं का परीक्षण

विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर अंतर

संवर्ग	संख्या	मध्यमान	विचलन	सयुंक्त मानक विचलन	विचलन की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
शहरी	13	.39	.23	.09	0.04	6.22	.05
ग्रामीण	12	.16					

उपरोक्त तालिका के आधार पर क्रांतिक अनुपात (t) 6.22 है, जो .05 विश्वास के स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।" "अतः शोध समस्या की प्रथम शून्य परिकल्पना .05 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या – 3

कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर अंतर

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	विचलन	सयुंक्त मानक विचलन	विचलन की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
शहरी	12	.44	.31	.13	0.05	6.20	.05
ग्रामीण	13	.13					

उपरोक्त तालिका के आधार पर क्रांतिक अनुपात (t) 6.20 है, जो किसी भी स्तर पर .05 विश्वास के स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।" .05 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष

इस प्रकार शोध अध्ययन में शोधकर्ता को निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. शोध अध्ययन के आधार पर, स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।" .05 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। शोध के आधार पर ये कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापक कक्षा में भिन्न–भिन्न व्यवहार करते है। सारणी में विज्ञान वर्ग के शहरी छात्राध्यापकों का मध्यमान विज्ञान वर्ग के ग्रामीण छात्राध्यापकों से अधिक है, जो ये प्रकट करता है कि विज्ञान वर्ग के शहरी छात्राध्यापकों का कक्षा शिक्षण व्यवहार विज्ञान वर्ग के ग्रामीण छात्राध्यापकों से अच्छा है।
2. शोध अध्ययन के आधार पर, स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।" .05 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। अर्थात कला वर्ग के शहरी एवं कला वर्ग के ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापक कक्षा में भिन्न–भिन्न व्यवहार करते है। सारणी में कला वर्ग के शहरी छात्राध्यापकों का मध्यमान कला वर्ग के ग्रामीण छात्राध्यापकों से अधिक है, जो ये प्रकट करता है कि कला वर्ग के शहरी छात्राध्यापकों का कक्षा शिक्षण व्यवहार कला वर्ग के ग्रामीण छात्राध्यापकों से अच्छा है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अधययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापक कक्षा में भिन्न–भिन्न व्यवहार करते है। जब शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का तुलना किया गया तो ये पाया गया कि शहरी छात्राध्यापकों का कक्षा शिक्षण व्यवहार ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार से अच्छा है।

साथ–साथ यह भी ज्ञात हुआ कि शहरी छात्राध्यापक ग्रामीण छात्राध्यापकों की तुलना में अप्रत्यक्ष व्यवहार अधिक करते है। यही कारण है कि शहरी छात्राध्यापकों द्वारा पढ़ाये गए छात्रों कि शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्राध्यापकों द्वारा पढ़ाये गए छात्रों कि शैक्षिक उपलब्धि से अधिक होती है।

अध्ययन के उपरोक्त निष्कर्षो से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्राध्यापकों का शिक्षण व्यवहार शहरी

छात्राध्यापकों से निम्न स्तर का है। ग्रामीण छात्राध्यापकों द्वारा अपने शिक्षण में सुधार लाने पर ही गुणवत्ता बढायी जा सकती है। इसके लिए ग्रामीण छात्राध्यापकों को, और सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहिए, जिससे उनके कक्षा शिक्षण में सुधार लाया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कौर जगदीप, पंजाब विश्वविद्यालय (2018)," नियंत्रण के नियंत्रण के संबंध में शिक्षक प्रशिक्षुओं की शिक्षक प्रभावशीलता और समस्या सुलझाने के कौशल पर व्यक्तित्व विकास मॉड्यूल का प्रभाव"*
2. *शमीना ई, मुमतास एन एस, (2018), "माध्यमिक स्तर पर भावी शिक्षकों के लिए एक कक्षा प्रबंधन योग्यता वृद्धि कार्यक्रम की प्रभावशीलता"*
3. *बेस्ट, जे0 डब्ल्यू0, और कहन, जे0 वी0 (2016), शिक्षा में अनुसंधान, 10 वां एड, पियर्सन शिक्षा भारत*
4. *अहलूवालिया, ए0, और कमलप्रीत (2016) है, विश्वविद्यालय के शिक्षकों के बीच नियंत्रण का दबाव, अनुभूतिमूलक अध्ययन, इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल और अनुसंधान, 3 (1), 2394–3386*
5. *अकाया, आर0, और अकोल, बी (2016), शिक्षकों के नियंत्रण के बीच संबंध और नौकरी से संतुष्टि, एक मिश्रित विधि का अध्ययन, इंटरनेशनल ऑनलाइन जर्नल ऑफ शैक्षिक विज्ञान, 8 (3), 71–82।*
6. *भंवरा, पी0 (2013), व्यवहार समस्या से संबंधित शिक्षकों के बीच ज्ञान स्कूल के बच्चों में, सिंहगढ़ जर्नल ऑफ नर्सिंग, 1 (2), 21–23।*
7. *दूबे, आर0 और ओर्पिनस, पी0 (2012), अत्यधिक स्कूल अनुपस्थिति को समझना स्कूल मना व्यवहार, बच्चे और स्कूल, 31 (2), 87–95।*
8. *हेनरी, ई0 गैरेट0 (2008), मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, दिल्ली, सुरजीत प्रकाशन, पीपी. 247–308*
9. *क्लूनीस–रॉस पी0, लिटिल, ई0 और किनुहिस, एम0 (2008), स्वयं की सूचना दी और वास्तविक उपयोग सक्रिय और प्रतिक्रियाशील कक्षा प्रबंधन रणनीतियों और उनके संबंध शिक्षक तनाव और छात्र व्यवहार के साथ, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 28 (6), 693–710।*
10. *जैक, सी0 रिचर्ड्स और थियोडोर एस0 रोडर्स (2001), दृष्टिकोण और मेथड्स इन लैंग्वेज टीचिंग, दूसरा संस्करण, 192–203।*
11. *हंस, आर0 (1986), 'टीचिंग एंड टीचिंग के बीच संबंध प्रभावशीलता', पीएच.डी. थीसिस, मेरठ विश्वविद्यालय।*
12. *भारत, शिक्षा आयोग, (1966), शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964–66, शिक्षा और राष्ट्रीय विकास (खंड 2) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार*